स्वास्थ्य प्रबन्ध:

1. वर्षा ऋतु से पहले एवं बाद में (साल में दो बार) कृमि नाशक दवा पिलायें।
2. रोग निरोधक टीके (मुख्यत: पी.पी.आर., ई.टी., पोक्स, एफ.एम.डी. इत्यादि) समय से अवश्य लगवायें।
3. बीमार पशुओं को छटनी कर स्वस्थ पशुओं से अलग रखें एवं तुरंत उपचार कराऐं।
4. आवश्कतानुसार बाह्य परजीवी के उपचार के लिए ब्यूटोक्स (0.1 प्रतिशत) का घोल से स्नान करायें।
5. नियमित मल परीक्षण (विशेषकर छोटे बच्चों) करायें।

सामान्य प्रबंध:

1. बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद साफ कपड़े से उसके नथुनों की सफाई करें।
2. नवजात बच्चों की नाभिनाल को शरीर से 3 सेमी. नीचे बाँधकर उसके लगभग एक सेमी नीचे काटकर टिंचर आयोडीन 2-3 दिन तक लगायें।
3. प्रत्येक बकरी की पहचान के लिए टेंगिंग अवश्य करें जिससे उसकी वंशावली, खान-पान आदि की सटीक जानकारी मिल सके।
4. बकरियों को साफ पानी दिन में (2-3 बार) पिलायें।
5. जिन बकरियों के नीचे दूध कम हो उनके बच्चों को उस बकरी के आस-पास ब्यायी बकरियों का दूध पिलायें।
6. जिन बकरियों के खुर बढ़ जाते हैं उनको समय पर काट दें।
7. प्रतिमाह बच्चों के शरीर भार को तोलते रहें जिससे उनकी बढ़वार व स्वास्थ्य का पता चलता रहे।

बाजार प्रबन्ध:

1. जानवरों को मांस के लिए शरीर भार के अनुसार बेचें।
2. सामान्यतया: मांस के बाजार भाव का 55 प्रतिशत शरीर भार पर बाजार में भाव मिलता है।
3. शुद्ध नस्ल एवं उच्च गुणवत्ता के जानवरों को प्रजनक बकरी फार्मो को बेचने पर अधिक लाभ होता है।
4. मांस उत्पादन के लिए पाले गये नरों को लगभग 1 वर्ष की उम्र पर बेच देवें। इसके उपरान्त शारीरिक भार वृद्धि बहुत कम (10-15 ग्राम प्रतिदिन) एवं पोषण खर्च अधिक रहता है।
5. बकरी पालक संगठित होकर उचित भाव पर बकरियों को बेचें।
6. बकरों को विशेष त्यौहार (ईद, दुर्गा पूजा) के समय पर बेचने पर अच्छा मुनाफा होता है।

तालिका: बकरियों के वार्षिक रोग-रोकथाम हेतु कलेन्डर/सूची

विवरण	अवधि	दवा/टीका व माध्यम	टीके का असर	आयु
डिवर्मिंग (अन्त: परजीवी नाशक)	वर्षा ऋतु से पहले तथा वर्षा ऋतु के बाद	एलबेन्डाजोल, फेनबेन्डाजोल, क्लोसेन्टल, मोरेन्टल टाइट्रेट (पिलायें)		3 माह से ऊपर
डिपिंग (बाह्य परजीवी नाशक)	मार्च व अक्टूबर	ब्यूटाक्स या इक्टोमिन के 0.1 प्रतिशत के घोल से नहलायें		एक माह से ऊपर
***टीकाकरण**				
पीपीआर	किसी भी समय जब बकरी 3 माह की आयु से ऊपर हो	त्वचा के नीचे	3 वर्ष तक	3 माह या ऊपर
खुरपका मुंहपका (एफ.एम.डी.)		शरीर के मांस वाले भाग में	छ: माह तक	
हिमोरेजिक सेप्टीसीमिया (एच.एस.)		शरीर के मांस वाले भाग में	छ: माह तक	
इन्ट्रोटोक्सीमिया (ई.टी.)		त्वचा के नीचे	छ: माह तक	
पोक्स		त्वचा के नीचे	एक वर्ष	

- एफ.एम.डी. एवं ई.टी. के टीकाकरण को प्रभावी बनाने के लिये 3-4 सप्ताह बाद बूस्टर डोज अवश्य लगवायें ।
- पी.पी.आर. को तीन वर्ष के अन्तराल पर एवं एफ.एम.डी. और ई.टी. के टीकों को छ: माह के अन्तराल पर अवश्य लगवायें।
- दो टीकों के मध्य कम से कम 15 दिन का अंतराल रखें। पहले पीपीआर का टीकाकरण करवायें।

* टीका निर्माता कम्पनी के निर्देशानुसार ही लगवायें ।

लेखक :

मनोज कुमार सिंह, अनुपम कृष्ण दीक्षित, सौविक पाल, वी. राजकुमार एवं विजय कुमार

प्रकाशक :

एम. एस. चौहान, निदेशक, भा.कृ.अ.प.-के.ब.अ.सं., मखदूम

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

किसान एकल खिड़की : 0565-2763320

वेवसाइट : www.cirg.res.in

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम,

फरह-281122, मथुरा (उ.प्र.)

ys9456684421@gmail.com

उत्तर प्रदेश में वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन

भाकृअनुप ICAR

ILRI INTERNATIONAL LIVESTOCK RESEARCH INSTITUTE

CIRG 1979 MATHURA

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - अन्तर्राष्ट्रीय पशुधन शोध संस्थान परियोजना : बिहार एवं उत्तर प्रदेश में बकरी दूध एवं मांस की मूल्य श्रृंखला का विकास

अक्टूबर 2018

वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन

हमारे देश में अनेक उन्नत नस्ल की बकरियों का भौगोलिक स्थिति के अनुरूप उद्‌भव हुआ है। आज भी अधिकांश बकरी पालक परंपरागत तरीकों से बकरी पालन कर रहे हैं, जिससे उत्पादन एवं लाभ बकरियों की उत्पादन क्षमता का लगभग 50% ही मिलता है। प्रस्तुत लेख वैज्ञानिक पद्यति से बकरी पालन को बताता है जिन्हें अपनाकर लाभ-लागत अनुपात 4:1 तक प्राप्त किया जा सकता है।

नस्ल का चुनाव:

1. नस्ल का चुनाव पोषण पद्धति, वातावरण, पारिस्थितिकी एवं बाजार के अनुरूप हो।
2. शुद्ध नस्ल की बकरियाँ ही रखें।

बीजू बकरे का चुनाव:

1. नर शुद्ध नस्ल का, शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ एवं चुस्त हो।
2. आहार को शरीर भार में परिवर्तित करने की अधिकतम क्षमता हो।
3. मध्यम एवं बड़े आकार की नस्लों में नर का भार नौ माह की उम्र तक 20-25 किलो तक होना चाहिए।
4. मां नस्ल के अनुरूप अधिक दूध देने वाली हो।
5. नर में अपने गुणों को अपनी संतति में छोड़ने की क्षमता हो।
6. मिलन कराने पर (>90%) बकरियों को गर्भित करता हो।
7. नर रोग ग्रसित एव संक्रमित रोग का वाहक न हो।

बकरी का चुनाव:

1. शुद्ध नस्ल की एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होनी चाहिए।
2. नस्ल के अनुरूप ऊंचाई -लम्बाई अच्छी होनी चाहिए।
3. दूध एवं दुग्ध काल अच्छा होना चाहिए।
4. प्रजनन क्षमता (दो ब्यातों के बीच अन्तराल एवं जुड़वा बच्चे पैदा करने की दर) अच्छी हो।

प्रजनन प्रबन्ध :

1. पूर्ण परिपक्व होने के बाद ही (डेढ़ से दो वर्ष) बकरे का प्रजनन में उपयोग करें।
2. एक बकरा 25 से 30 बकरियों को ग्याभिन कराने के लिए पर्याप्त है। 30 से अधिक बकरियों पर बकरों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए।
3. प्रजनक बकरे को एक से डेढ़ वर्ष बाद बदल दें। जिससे अन्त: प्रजनन के दुश्परिणामों से बचा जा सके।
4. मध्यम आकार की नस्लों में प्रथमवार बकरियों को गर्भित कराते समय उनका शरीर भार 16 किलो एवं उम्र 10 माह या अधिक हो।
5. बड़े आकार की नस्लों में प्रथमवार बकरियों को गर्भित कराते समय उनका शरीर भार 20 किग्रा. एवं उम्र 12 माह होनी चाहिए।
6. वातावरण को ध्यान में रखते हुये उत्तर-मध्य भारत में बकरियों को अक्टूबर-नवम्बर एवं मई-जून माह में ग्याविन करायें।
7. कम प्रजनन एवं उत्पादन क्षमता वाली (10 - 20 %) एवं रोग ग्रसित मादाओं को प्रतिवर्ष निष्पादन करते रहना चाहिए।
8. मादाओं को गर्मी में आने पर 10-16 घन्टे बाद नर से मिलन करायें।

पोषण प्रबन्ध :

1. नवजात बच्चों को पैदा होने के आधे घन्टे के अन्दर खीस पिलायें। इससे उन्हें रोग प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त होती है।
2. बच्चों को 15 दिन का होने पर हरा चारा एवं रातब मिश्रण खिलाना आरंभ करें तथा 3 माह का होने पर माँ का दूध पिलाना बन्द कर दें ।
3. मांस उत्पादन के लिये नर बच्चों को 3 से 9 माह की उम्र तक शरीर भार का 2.5 से 3% तक समुचित मात्रा में ऊर्जा (मक्का, जौ, गेहूँ) एवं प्रोटीन (मूंगफली, अलसी, तिल, बिनौला की खल) अवयब युक्त रातब मिश्रण देवें। इस रातब मिश्रण में ऊर्जा की मात्रा लगभग 60% एवं प्रोटीन युक्त अवयब लगभग 37%, खनिज मिश्रण 2% एवं नमक 1% होना चाहिए।
4. वयस्क बकरियों (एक साल से अधिक) एवं प्रजनन के लिये पाले जाने वाले नरों में ऊर्जायुक्त अवयबों की मात्रा लगभग 70% होनी चाहिए। पोषण में खनिजों एवं लवणों का नियमित रूप से शामिल रखें।
5. जिन बकरियों का दूध उत्पादन लगभग 500 मि.ली./दिन हो उन्हें 250 ग्राम, एक लीटर दूध पर 500 ग्राम रातब मिश्रण दें। इसके उपरांन्त प्रति एक लीटर अतिरिक्त दूध पर 500 ग्राम अतिरिक्त रातब मिश्रण देवें।
6. बकरियों के बाड़े में छगाई करने के लिए चारा वृक्ष जैसे नीम, पीपल, बेर, खेजड़ी, पाकर, बबूल खूब लगायें।
7. दूध देने वाली, गर्भवती बकरियों (आखिर के 2 से 3 माह) एवं बच्चों (3 से 9 माह) को 200 से 350 ग्राम प्रतिदिन रातब मिश्रण दें।
8. हरे चारे के साथ सूखा चारा अवश्य दें। अचानक आहार व्यवस्था में बदलाव न करें एवं अधिक मात्रा में हरा एवं गीला चारा न दें।

आवास प्रबन्ध:

1. एक वयस्क बकरी को 3-4 वर्गमीटर खुला एवं 1-2 वर्गमीटर ढका क्षेत्रफल की आवश्यकता होती है।
2. पशु गृह में प्रर्याप्त मात्रा में धूप, हवा एवं खुली जगह हो।
3. सर्दियों में ठंड से एवं बरसात में बौछार से बचाने की व्यवस्था करें।
4. पशु गृह को साफ एवं स्वच्छ रखें।
5. छोटे बच्चों को सीधे मिट्‌टी के सम्पर्क में आने से बचने के लिए फर्श पर सूखी घास या पुआल बिछा दें तथा उसे तीसरे दिन बदलते रहें।
6. वर्षा ऋतु से पूर्व एवं बाद में फर्श के ऊपरी सतह की 6 इंच मिट्‌टी बदल दें।
7. छोटे बच्चों, गर्भित बकरियों एवं प्रजनक बकरे की अलग आवास व्यवस्था करें।
8. ब्यांत के बाद बकरी तथा उसके बच्चों को एक सप्ताह तक साथ रखें।